मानव संसाधन विकास का गांधीवादी दृष्टिकोण

डॉ. विजय कुमार सिंह

आज के प्रगतिशील युग में अल्पविकसित देशों के समक्ष विचारणीय प्रश्न यह है, कि प्रगति के पथ पर किस प्रकार अग्रसर रहें, इसीलिए हमारे देश के समक्ष भी यह चुनौती बनी हुई है कि वह प्राकृतिक संसाधनों के उचित विदोहन के साथ–साथ, मानवीय संसाधनों का स्तर भी उच्च बनाए रखें, उच्चगुणक्ता, नैतिक मूल्यों का उत्थान, जनसंख्या स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रशिक्षण आदि का स्तर ऊंचा रखते हुए देश के अर्थिक विकास का स्तर ऊंचा उठाए। क्यों कि ऐसा देखा जा रहा है कि विश्व के लगभग समस्त ऐसे देश जो विकसित है उनमें मानव संसाधन विकास का स्तर भी उच्च है।

मानव की प्रगति के लिये मानवीय संसाधनो के विकास का महत्व गॉधीजी ने पहचाना था। इसीलिये मानवीय संसाधन विकास हेतु उसकी आत्मनिर्भरता को ध्यान में रखकर उन्होंने बुनियादी शिक्षा व्यवस्था का समर्थन किया। इस शिक्षा व्यवस्था में बुद्धि एवं कला–कौशल के विकास के साथ–साथ नैतिक विकास को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

संकुचित स्वार्थ के स्थान पर राष्ट्र प्रेम, अधिकारों के साथ कर्त्तव्य का ध्यान कठिन परिश्रम लगन व समर्पण से ही अर्थिक विकास द्वारा मानव कल्याण का मार्ग सुगम होगा। अतः यदि यह शिक्षा प्रणाली के माध्यम से मानवीय नैतिक मूल्यो के सृजन और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की ओर अधिक ध्यान देंगे तो हमारा आर्थिक विकास का उपक्रम सफल होगा। यह व्याष्टि तथा समष्टि दोनों के लिये शुभ फलदायी होगा।